मातेश्वरी जी की अविस्मरणीय यादें...

ना ही माँ के बिना बच्चों का जीवन सफल हो सकता, ना ही उन्हें सुकून मिल सकता। माँ की पालना उनके ही नसीब में है जो बहुत ही भाग्यवान हैं। यहाँ तो जगदम्बा सरस्वती ने न सिर्फ बच्चों की पालना की, बल्कि उन्हें गढ़ा भी। जो आगे चल अपने परिवार सहित अपनी सभी ज़िम्मेवारियों को ईमानदारी और वफादारी पूर्वक निर्वहण कर सके। मम्मा ने न सिर्फ प्यार किया, पर अपने आत्मीय स्नेह से सभी बच्चों को सुनियोजित संजोया भी। उन्होंने नेम और प्रेम में कभी समझौता नहीं किया, सदा बैलेन्स बनाये रखा। जो भी उनके सम्पर्क में आये, वे उनकी प्रेमपूर्ण यादों से ओतप्रोत होकर यही कहते हैं कि मम्मा बिना हमारा जीवन संवरना असंभव सा था। प्रेममूर्ति मम्मा के साथ के अनुभव का कुछ अंश उन्हीं के शब्दों में....

बिन कहे मन की बात जान लेती थी मम्मा

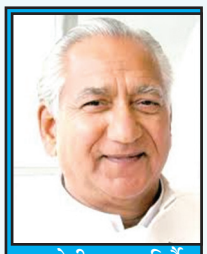
राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर

सबसे पहले मैं मम्मा से 1959 में मुंबई में वाटरलू मेन्सन एरिया जो कोलाबा के नज़दीक है, मिला था। उस समय ज्ञान में आते मुझे सिर्फ एक महीना ही हुआ था। मम्मा मुम्बई में लगभग एक महीना रहीं। मम्मा का जो व्यक्तित्व था, वह बड़ा तेजोमय और स्वाभाविक रूप से एक माँ की भासना देता था। उनसे मिलने पर मुझे ऐसा लगा कि मैं पहले भी इनसे मिला हूँ। यह बात उनसे कही भी थी। मम्मा ने कहा, हाँ, कल्प पहले मिले थे परन्तु उस समय समझ में नहीं आया था। एक बार की बात है...

मम्मा ने सदा अपने को बाबा के सामने एक विनम्र बच्ची के रूप में ही प्रत्यक्ष किया!

हर शाम को विशेष मम्मा का क्लास 5 से 6 बजे तक रखा जाता था। मैं भारतीय नौ सेना में था, हमारे लिए यह एक अच्छी सुविधा थी। मम्मा की क्लास घंटा-पौना घंटा चलती थी। मम्मा का ज्ञान स्पष्ट करने का तरीका जो था वो बहुत विशिष्ट और सरल था। हमारे मन में ज्ञान के बारे में अथवा धारणा के बारे में कुछ प्रश्न होते थे लेकिन हम पूछते नहीं थे। आश्चर्य की बात यह है कि मम्मा की वाणी में उन सब शंकाओं और उन सब प्रश्नों के स्वत: ही उत्तर मिलते थे। इसके बारे में मैंने मम्मा से पूछा, मम्मा आपको कैसे मालूम कि हमारे मन में यही प्रश्न हैं, जिनके उत्तर आपने दिये? मम्मा ने कहा, ऐसी बात तो नहीं, मैं बाबा को याद करती हूँ, बाबा की तरफ से जो प्रेरणा आती है उसके अनुसार मैं सुनाती हूँ। उन्होंने कभी यह नहीं कहा, मुझे पता पड़ा था। सदा माँ ने बाबा की तरफ ही इशारा किया, अपने को सदा उनकी विनम्र बच्ची के रूप में ही प्रत्यक्ष किया। ऐसी थीं हम सबकी माँ 'मम्मा'।

माँ ने समाया भी और सजाया भी

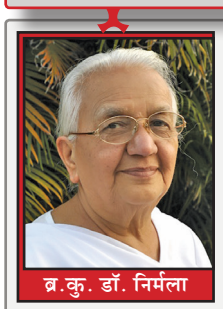
ब्र.कु. डॉ. निर्मला

मम्मा आयी थी अपनी छोटी उम्र में, केवल 17 साल की उम्र कोई बड़ी नहीं होती। आजकल हम छूट देते हैं कि युवा है ना, लेकिन मम्मा ने अपनी युवा अवस्था को तपस्या से तपाया। वह तपस्या का स्वरूप दिखायी देती थी। आजकल समाज में लाखों शिक्षिकायें हैं लेकिन माँ स्वरूपा शिक्षिकायें बहुत कम हैं, गिनती की हैं। मम्मा माँ स्वरूपा टीचर थी। माँ का प्रथम कर्त्तव्य है सारे परिवार को एकता के सूत्र में बांधकर रखना। मम्मा यह कार्य करने में नम्बर वन थी। दो यज्ञवत्सों में कोई मनमुटाव हुआ तो मम्मा उस मनमुटाव को मिटाकर उन दोनों के दिलों को जोड़ने का कार्य करती थी। हर बच्चे की कमी और कमज़ोरी को मम्मा अपने में समा लेती थी। बाबा को उतना ही बताती थी जितना बहुत ज़रूरी हो। एक आदर्श माँ का यही लक्षण होता है कि बच्चों की गलतियों को समाना और उनको बच्चों से निकालना। उसी प्रकार, मम्मा इशारे से शिक्षा देती थी और सशक्त बनाने के लिए योग का दान करती थी।

माँ ने समाया भी और सजाया भी

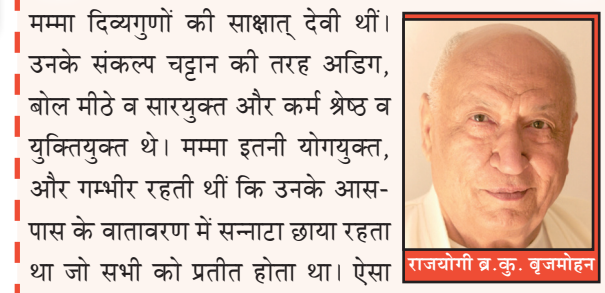
राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन

मम्मा दिव्यगुणों की साक्षात् देवी थीं। उनके संकल्प चट्टान की तरह अडिग, बोल मीठे व सारयुक्त और कर्म श्रेष्ठ व युक्तियुक्त थे। मम्मा इतनी योगयुक्त, और गम्भीर रहती थीं कि उनके आस-पास के वातावरण में सन्नाटा छाया रहता था जो सभी को प्रतीत होता था। ऐसा लगता मानो वह कोई चलता-फिरता लाइट हाऊस और माइट हाऊस हों। मम्मा की चाल फरिश्तों जैसी थी। आश्रम-वासियों को पता भी नहीं चलता था कि कब मम्मा उनके पास से गुज़र गयी अथवा कब से वह उनके पीछे खड़ी हुई उनकी एक्टीविटी का निरीक्षण कर रही थीं। मम्मा ने मुझे सदा 'बृजमोहन जी' कहकर बुलाया। उस अलौकिक माता का बच्चों से जितना असीम प्यार था उतना किसी लौकिक माता का क्या होगा! मुझे तो ऐसे लगने लगा था कि जैसे कि मेरी लौकिक माँ भी मम्मा ही हैं।

प्रेमपूर्ण और नेमपूर्ण ज्ञानदेवी

हम बच्चे जब भी मम्मा से, 'प्रेम में नेम (नियम) नहीं' की उक्ति के अनुसार, कोई ऐसा कार्य करने को कहते जिससे हमारा अलबेलापन दिखाई देता हो, तो वह हमें बहुत ही मीठे ढंग से कर्मों की गुह्य गति के बारे में सावधान कर देती थीं। एक बार जब मम्मा का अम्बाला छावनी सेवाकेन्द्र पर आना हुआ, तो मैं नंगल (जहाँ पर मैं सर्विस करता था) से उन्हें मिलने के लिए गया और उनसे नंगल चलने का अनुरोध करने लगा। मम्मा कह रही थीं कि कुछ दिनों के बाद एक प्रोग्राम बनाओ। परन्तु मम्मा के भावार्थ को न समझने के कारण मैंने दुबारा अनुरोध किया कि मम्मा आप कल ही चलो ना! लेकिन मम्मा का पहले का जो प्रोग्राम था, उसे पूरा करने के बाद ही वे आ सकती थीं, ये मैं पूरा समझ नहीं पाया। फिर वो कार्य सम्पन्न करने के बाद वे मेरे अनुरोध पर नंगल आईं। इससे स्पष्ट होता है कि मम्मा लवफुल और लॉफुल (प्रेमपूर्ण और नेमपूर्ण) की दोनों योग्यताओं का इकट्ठा प्रयोग किस कुशलता से करती थीं! वह प्रेम के लिए नेम या नेम के लिए प्रेम को तिलांजलि नहीं देती थीं।

ज्ञान श्रृंगार के आगे फीके दैहिक श्रृंगार

ब्र.कु. संतोष,मुम्बई

मम्मा को देखने से ही तपस्या और त्याग की मूर्ति का अनुभव होता था। मम्मा तुरन्त दान महापुण्य जमा करने वाली थी। इसका मिसाल बृजइन्द्रा दादी ने हमें सुनाया था। एक बार हैदराबाद (सिन्ध) में एक ऑफिसर ब्रह्मा बाबा से मिलने आया था क्योंकि लोगों के मन में गलत धारणायें थी कि बाबा माताओं-कन्याओं का घर-बार छुड़ाते हैं, जादू करते हैं आदि-आदि। तो बाबा उस ऑफिसर को समझा रहे थे कि देखो मैं इन बच्चियों को क्या देता हूँ? ना गहने देता श्रृंगार के लिए, ना अच्छे कपड़े देता हूँ। इनको गहने और कपड़ों से भी ऊँचा श्रृंगार ज्ञान-श्रृंगार मिलता है जिससे इन्हें आत्मिक सुख मिलता है, जिस कारण ही ये भौतिक सुखों को त्याग कर आत्मिक सुख की ओर भागती हैं। यह वार्तालाप मम्मा और बृजइन्द्रा दादी ने बाहर बगीचे में टहलते हुए सुना। मम्मा, बृजइन्द्रा दादी को कहने लगी कि देखो, कि बाबा हमारे लिए क्या कहता है। परन्तु हमने तो अब तक ये विनाशी गहने पहने हुए हैं। मम्मा ने भी उस समय थोड़े बहुत गहने पहने हुए थे और बृजइन्द्रा दादी को तो बाबा ने लौकिक जीवन में बहुत श्रृंगारा था। मम्मा की यह बात सुनकर बृजइन्द्रा दादी ने कहा कि हमारे इन झूठे गहनों से बाबा के बोल झूठे लगेंगे क्योंकि हमने गहने पहने हैं और बाबा कहते हैं कि ये झूठा श्रृंगार छोड़ सच्चा श्रृंगार करती हैं। अब क्या किया जाए? तो मम्मा ने कहा, चलो हम दोनों ये झूठे गहने उतार देती हैं। तो उन दोनों ने तुरन्त ही गहने उतार दिये। उन्हें देखकर सारे यज्ञ वत्सों ने अपने सब गहनों का स्वयं ही त्याग कर दिया। मतलब यह है कि मम्मा सदैव बाबा के महावाक्यों को साकार करने में नम्बर वन रही।